प्रेस विज्ञप्ति

हिन्दुस्तान कॉलेज में ''ह्यूमन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स'' पर 8 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन समारोह

जिन खोजा तिन पाईयाँ, जीवन के आयाम – ओम पाल सिंह

उत्तर प्रदेश के 41 इंजीनियरिंग कॉलेजों के शिक्षकों का मार्गदर्शन

शारदा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के प्रतिष्ठित संस्थान हिन्दुस्तान कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी में ''ह्यूमन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स'' पर आयोजित 8 दिवसीय कार्यशाला विधिवत समापन सम्पन्न हुआ। जिसके मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री ओम पाल सिंह जी रहे तथा विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध समाज सेवी श्री अशोक जैन रहे साथ ही एकेटीयू द्वारा नियुक्त प्रेक्षक श्री मोती चंद यादव एवं श्री राजीव कुमार रहे।

सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत एवं आभार प्रकट किया तथा अपने संक्षिप्त स्वागत सम्बोधन में एकेटीयू के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक का हिन्दुस्तान कॉलेज को ''ह्यूमन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल एथिक्स'' के फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम हेतु नोडल सेंटर बनाये जाने पर आभार व्यक्त किया साथ ही इस आठ दिवसीय कार्यशाला की महत्ता पर प्रकाश डालते हुये सभी प्रतिभागी शिक्षकों से इससे आत्मसात कर जीवन में उतारने एवं समाज में इसके पहलुओं को फैलाने की आशा व्यक्त की तथा भविष्य में भी विश्वविद्यालय द्वारा दी गयी जिम्मेदारियों को निष्ठापूर्वक निभाने का आश्वासन दिया।

मानविकी विभाग के सहायक आचार्य ने बताया कि आठ दिवसीय मूल्य शिक्षा पर आधारित इस कार्यशाला में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। शिक्षा की भूमिका निश्चित मानवीय आचरण से जीने की योग्यता को विकसित करना है। शिक्षा की भूमिका व्यक्ति को दबाव, प्रभाव से मुक्त कर, स्वयं के अधिकार पर निर्णय लेने की योग्यता को विकसित करना है। इस कार्यशाला में स्वयं से लेकर अस्तित्व तक के संगीत को बताया गया। जब व्यक्ति स्वयं में संगीत में होता है तभी वह सुख पूर्वक जी पाता है और बाहर सुख सुनिश्चित करने के लिए कार्यक्रम बना पाता है। आज के आधुनिक युग में मानव के इच्छा विचार आशा में अर्तविरोध दिखता है जिसका परिणाम

स्वयं में निराशा के रूप में दिखता है और इसका प्रभाव मनुष्य के व्यवहार से परिवार, समाज और अस्तित्व तक दिखता है।

तत्पश्चात् उत्तर प्रदेश के 41 संस्थानों से आये प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया ली गयी सभी ने इस कार्यशाला को जिन्दगी जीना सिखाने की प्रक्रिया बताया तथा कार्यशालाओं के प्रत्येक सीख को जीवन में उतारने के लिए प्रेरणापद बताया।

शारदा ग्रुप के वाइस चेयरमैन श्री वाई. के. गुप्ता जी ने अपने सम्बोधन में मानव मूल्यों को सीख धरातल पर उतारकर जीवन में क्रियान्वित करने की आवश्यकता पर बल दिया तथा देश के प्रधानमंत्री के 2022 में नये भारत के सपने को साकार करने के पथ पर निरंतर अग्रसर होने के लिए प्ररित करते हुये बताया कि भारतीय मस्तिष्क दुनिया का सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क है।

मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री ओम पाल सिंह जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि सफलता–विफलता को जीवन का आयाम बताते हुये जिन खोजा तिन पाईयाँ को चिरतार्थ करते हुये हममें से प्रत्येक को जीवन के आयामों में से जीवन को सार्थक बनाने को प्रयासरत रहना है और जीवन का उद्देश्य भारत सेवा होना चाहिए नाकि जीवन यापन का कोई साधन। 'अतिथि देवो भव' भारतीय संस्कृति रही है परन्तु कुछ लोगों के निहित स्वार्थ वस 'आतंकी देवो भव' मान लिया गया जिसके फलस्वरूप देश को यह दिन देखने को मजबूर होना पड़ा। भारत के आम नागरिकों कोई धन शिक्षा एवं स्वास्थ पर खर्च नहीं करना पड़ेगा उस दिन भारत आत्मनिर्भर होगा। प्रभावित होना कमजोरी है और प्रभावित होने वाले लोग सफल नहीं होते। अतः सीखिये और सिखाईये मौलिक रहकर। आज अपने बच्चों की सुनें अन्यथा भविष्य में बच्चे आपकी नहीं सुनेंगे। पहला सूत्र माँ की सेवा और माँ की अवज्ञा न करते हुये उन्हें विश्वास में लेना सीखें। संतुष्टि अंदर से आती है जीवन के वाहरी आडम्बरों से नहीं। दिल का दरवाजा अंदर से खुलता है। हमें स्वयं के प्रकाश में जीना सीखना चाहिए। शिक्षकों के लिए स्वभाविक रूप से शिष्य के अंतरमन को पहचानना तथा उसे स्वभाविक रूप से निर्णय लेने स्वतंत्र करने पर बल दिया। सरकारें तो आती जाती रहेंगी परन्तु देश हमेशा प्रगति पथ पर चलता रहेगा। अतः अंतरमन के आदेश को मानते हुये जगत नियंता के निर्देशन में कार्य करते रहे।

आगरा से आये प्रसिद्ध समाज सेवी श्री अशोक जैन ने अपने सम्बोधन में बताया कि सामाजिक मूल्यों के साथ आप स्वस्थ रह सकते हैं स्वयं को

जीवन दान के उपरांत अनेक दिल के मरीजों को ठीक कराने के कारवां जिक्र करते हुये तथा उत्तर प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ रामलाल वृद्धाश्रम से जुड़े रहने का जिक्र करते हुये कहा कि जीवन में किसी का भला करना हमेशा सम्भव नहीं होता परन्तु किसी का बुरा न करना सुनिश्चित अवश्य करें। आलोचनायें सफलता का प्रतीक हैं जिन से निडर होकर समाज के लिए समपर्ण एवं सेवा भाव में आत्म संतुष्टि का रास्ता खोजें।

कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं समूह छायाचित्र वितरित किये गये ।

जूद रहे।